भद्रकाली प्रयोग

ऐसा हो ही नहीं सकता, कि आप भद्रकाली प्रयोग करें और आपका कार्य उसी क्षण ही सम्पन्न न हो.... एक गोपनीय और अत्यन्त दुर्लभ प्रयोग...

काली साधना अपने आप मेंअद्वितीय एवं दुर्लभ साधना है, सभी साधक इसे सम्पन्न करने के लिये सतत् प्रयासरत रहते हैं। यदि साधक संन्यासी है, तो वह अपने आभ्यान्तरिक उत्थान, साधनात्मक श्रेष्ठता को प्राप्त कर पाता है; यदि वह गृहस्थ साधक है, तो इसे समपन्न कर वह अपने भौतिक जीवन की समस्त आपदाओं को समाप्त कर, पूर्ण समृद्धिमय, ऐश्वर्यमय, शत्रु रहित हो बाधाओं का निवारण कर, कष्ट, पीड़ा, दुःख, तनावों से मुक्ति पाता है। अतः स्पष्ट है, कि यह साधना जितनी संन्यासियों के लिये महत्वपूर्ण है, उतनी ही महत्वपूर्ण गृहस्थ साधकों के लिये भी है।

'मार्कण्डेय पुराण' में काली की उत्पत्ति भगवती जगदम्बा के ललाट से मानी गई है। यद्यपि काली के असंख्य रूप हैं, फिर भी साधकों द्वारा प्रमुख रूप से काली के तीन स्वरूप **'भद्रकाली'**, **'श्मशान काली'** तथा **'महाकाली'** की साधना की जाती है। वेदों में भी काली की स्तुति भद्रकाली के नाम से की गई है।

काली अत्यन्त तीक्ष्ण साधना मानी गई है, जबकि ऐसा नहीं है, काली की स्तुति, साधना तीक्ष्ण व सौम्य दोनों रूपों में की जाती है, संन्यासी इसे शीघ्र सम्पन्न करने के लिये इसकी तीक्ष्ण प्रक्रिया अपनाते हैं, जबकि गृहस्थ साधकों के लिये सौम्य प्रक्रिया विख्यात है, जिसे अपनाकर वे आसानी से मनोवांछित प्राप्त कर सकते हैं।

काली की महाकाल की शक्ति के रूप में भी प्रार्थना करते हैं, काली के इस स्वरूप की साधना सम्पन्न करने से साधक में शक्ति का संचार होता है। काली अपने दोनों हाथों में अभय और वर मुद्रा धारण की हुई हैं अर्थात् वे अपने शुद्ध-सात्विक साधक को निर्भयता और वर प्रदान कर उसकी अभिलाषाओं को पूर्ण करती हैं। काली से वर प्राप्त कर साधक में दृढ़ता, निर्भयता तथा साहस और संकल्प शक्ति का उद्भव होता है।

समाज में व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता ही है, वह हर क्षण आकस्मिक संकट, बाधाओं और तनावों से जूझता रहता है, कभी-कभी असफल होने पर वह इन सबसे अत्यधिक दुःखी और तनावग्रस्त होकर जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है, वह इन सबसे बच निकलने के लिए अनेकों प्रयास करता है, लेकिन दिन-प्रतिदिन तनाव में फंसता ही जाता है। यदि साधक विभिन्न उपायों के साथ ही साथ भद्रकाली प्रयोग का सहारा लेता है,

तो इन विषम परिस्थितियों से मुक्ति आसानी से प्राप्त कर सकता है। भद्रकाली अपने सौम्य स्वरूप में विद्यमान रहकर साधकों की मनोकामनाओं की पूर्ति करती है।

काली के करुणामय स्वरूप की रामकृष्ण परमहंस स्तुति करते थे। काली अपने भक्तों पर अत्यन्त करुणा और कृपा करती हुई विराजमान रहती है, अतः काली के इस स्वरूप की साधना सम्पन्न कर साधक सभी आपदाओं पर विजय प्राप्त कर सकता है।

यह एक भ्रांति है, कि साधना में यदि न्यूनता रह जाती है, तो साधक को विपरीत परिणाम भोगने को मिलते हैं। लेकिन गृहस्थ साधकों के लिये साधनाओं की सौम्य प्रक्रिया को ही प्रकाशित किया जाता है, जिससे साधक का किसी प्रकार का कोई अनिष्ट नहीं होता, वह अत्यन्त निर्भयता से यह साधना सम्पन्न कर सकता है। पूर्ण श्रद्धा से करने पर किसी प्रकार का कोई विपरीत फल उसे नहीं भोगना पड़ता है, वैसे भी मां काली के ममतामयी स्वरूप की साधना से साधक को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं उठानी पड़ती है।

भद्रकाली प्रयोग सम्पन्न करने का प्रभाव तत्क्षण दिखाई देता है। कभी-कभी तो साधना काल में, साधक जिस कार्य हेतु साधना सम्पन्न करने बैठता है, पूर्ण होता दिखाई देता है, लेकिन यह ध्यान रखना होगा, कि वह साधना बीच में ही न समाप्त करे, वरन उसे पूर्णता के साथ सम्पन्न करे।

प्रयोग विधि

- प्रयोग हेतु आवश्यक सामग्री है-**'भद्रकाली यंत्र, काली हकीक माला' एवं 'काली चित्र'।**
- यह तीन दिवसीय साधना है।
- इसे 05.04.13 को प्रारम्भ कर 07.04.13 को समाप्त करें या किसी भी एकादशी से प्रारम्भ करें।
- साधक सफेद वस्त्र धारण कर साधना में बैठें।
- चित्र और यंत्र को स्वच्छ श्वेत वस्त्र पर स्थापित करें।
- संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न कर यंत्र व चित्र का पूजन सम्पन्न करें तथा जिस कार्य के लिये साधना कर रहे हों, उसे पूर्ण करने की प्रार्थना करें।

भद्रकाली अपने सौम्य स्वरूप में विद्यमान रहकर साधकों की मनोकामनाओं की पूर्ति करती है। काली के करुणामय स्वरूप की ही रामकृष्ण परमहंस स्तुति करते थे।

मां काली अपने भक्तों पर अत्यन्त ममता और कृपा करती हुई विराजमान रहती हैं, अतः काली के इस स्वरूप की साधना सम्पन्न कर साधक विजय प्राप्त कर सकता है, सभी आपदाओं पर।

ध्यान

भीमां भीमोग्रदंष्ट्राञ्जन गिरि विलसत्तुल्य कान्तिं दशास्यां।
त्रिशल्लोलाक्षि मालां दशललितभुजां पंक्ति पादांस्तथैव।।
शूलं बाणं गदां वै धनुरथदधतीं शंख चक्रे भुशुण्डीं।
वन्दे कालीं कराग्रे परिधमसि युतं तामसीं शीर्षकं च।।

- काली की प्रमुख नवशक्तियों का पूजन करें। यंत्र पर चारों ओर नौ कुंकुम की बिन्दियां लगाते हुए निम्न क्रम उच्चारण करें-

ॐ जयायै नमः।
ॐ विजयायै नमः।
ॐ अजितायै नमः।
ॐ अपराजितायै नमः।
ॐ नित्यायै नमः।
ॐ विलासिन्यै नमः।
ॐ दोग्ध्रयै नमः।
ॐ अघोरायै नमः।
ॐ मंगलायै नमः।

- निम्न भद्रकाली मंत्र का नित्य 11 माला मंत्र उच्चारण करें-

मंत्र

ॐ भं भद्रायै नमः आगच्छ भं ॐ

- खीर का भोग लगायें तथा स्वयं वह भोग ग्रहण करें।
- तीसरे दिन साधना समाप्ति के बाद यंत्र व चित्र को नदी में विसर्जित कर दें।

जब भी किसी विशेष कार्य के लिये जाना हो, तो उपरोक्त मंत्र का सात बार उच्चारण कर, उस कार्य के लिये जायें, सफलता मिलेगी।

साधना सामग्री- 330/-